

वज्रपात से निपटने की तैयारी पहले से करें, सुरक्षित रहें

- ❖ खेत, खलिहान, बाग-बगीचों तथा मकान की घेराबन्दी तारों से न करें क्योंकि ये वज्रपात को आसानी से आकर्षित करते हैं।
- ❖ आसपास कम ऊँचाई वाले फलदार पेड़ तथा पौधे लगायें।
- ❖ ऊँचे पेड़ के तने या टहनियों में तांबे का एक तार स्थापित कर जमीन में काफी गहराई तक दबा दें ताकि पेड़ सुरक्षित हो जाये।
- ❖ कपड़े सुखाने के लिये तार का प्रयोग न कर जूट या सूत की रस्सी का प्रयोग करें।
- ❖ बिजली मिस्त्री के संपर्क कर अपने घर में तड़ित चालक लगावा लें।
- ❖ मजबूत छत वाला पक्का मकान सबसे सुरक्षित स्थल है।

वज्रपात से घायल व्यक्ति को तुरन्त इस प्रकार प्राथमिक उपचार दें।

- ❖ हृदय के पास मालिश करें और मुँह द्वारा सांस देकर पुनर्जीवन देने की चेष्टा करें। ऐसा तब तक लगातार करें जब तक कोई मदद न पहुँचे।
- ❖ यथा शीघ्र चिकित्सक के पास पहुँचायें।
- ❖ चिकित्सा सुविधाओं एवं दवाओं के लिये निकटस्थ प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र से संपर्क करें।

वज्रपात से पीड़ित व्यक्तियों हेतु मुआवजा

- ❖ मौत होने पर एक लाख रुपये
- ❖ अपंग होने पर 35 हजार रुपये
- ❖ गंभीर घायल को 7500 रुपये
- ❖ दुधारू पशु की मौत पर 10 हजार रुपये

- ❖ भेड़-बकरी की मौत पर एक हजार रुपये
- ❖ ध्वस्त पक्के मकान पर 25 हजार रुपये
- ❖ ध्वस्त कच्चे मकान पर 10 हजार रुपये
- ❖ पक्के मकान में क्षति होने पर 5 हजार रुपये
- ❖ कच्चे मकान में क्षति होने पर 2500 रुपये
- ❖ झोपड़ी ध्वस्त होने पर 2 हजार रुपये

मुआवजे की राशि प्राप्त करने के लिए आवश्यक कागजातों के साथ आवेदन अंचल अधिकारी/उपायुक्त के कार्यालय में जमा करें। उपायुक्त से प्रस्ताव प्राप्ति के पश्चात आपदा प्रबंधन विभाग द्वारा मुआवजा अविलम्ब उपलब्ध कराने का प्रावधान है।

वज्रपात से बचने के उपाय स्वयं जानें, दूसरों को भी बतायें।



वज्रपात

बचाव एवं सहायता

आपदा प्रबंधन विभाग इमारखण्ड सरकार

वज्रपात - कुछ महत्वपूर्ण तथ्य

- समुद्र तल से अधिक ऊँचाई पर अवस्थित होने, घने जंगल, खनिज सम्पदा की प्रचुरता एवं छोटानागपुर पठार पर अवस्थित होने के कारण झारखण्ड राज्य में वज्रपात की घटनायें अन्य समतली राज्यों के तुलना में अधिक होती हैं।
- वज्रपात कोई दैवी प्रकोप नहीं बल्कि एक वायुमंडलीय घटना है जो हवा और बादलों में उपस्थित जलकणों के घर्षण के परिणाम स्वरूप पैदा होती है। आग के गोले के रूप में गिरने वाली बिजली के गिरते समय जोरों की आवाज होती है और आकाश में बिजली के तारों के स्पार्क जैसा दृश्य दिखाई देता है।
- मॉनसून (जून-सितम्बर) की तुलना में पूर्व मॉनसून अवधि में वज्रपात की घटनायें अधिक एवं घातक होती हैं।
- मॉनसून अथवा पूर्व मॉनसून अवधि में 10-15 दिनों की भीषण गर्मी के बाद जब पहली बारिश की स्थिति बनती है तो उस अवधि में वज्रपात अवश्यम्भावी है।
- यदि आकाश में अचानक कम ऊँचाई वाले घने काले एवं लटकते बादल दिखें तो पहली बूँद के एक घन्टे बाद तक कभी भी कही भी वज्रपात हो सकता है।
- आप जहाँ मौजूद हैं वहाँ से 5 किलोमीटर की परिधि में कहीं भी बिजली चमकती है या ठण्का गिरता है तो समझ ले कि अगला झटका आपके आसपास हो सकता है।
- यदि बिजली चमकने के 10 सेकेण्ड के बाद गर्जन सुनाई दे तो इसका अर्थ है कि वह आपसे 3 किलोमीटर दूर है। अतः तुरंत सुरक्षित आश्रय ढूँढ कर उसकी तरफ लपकें।

- जब किसी पर बिजली गिरती है तो वह जलता नहीं है, बल्कि उसका हृदय एवं श्वास नली प्रभावित होते हैं।
- वज्रपात से सिर्फ 30 प्रतिशत लोगों की ही मृत्यु होती है। यदि समय पर प्राथमिक उपचार प्राप्त हो जाये तो लंबी बिमारी की संभावना भी बहुत कम हो जाती है।
- एक ही जगह पर कई बार वज्रपात हो सकता है।

सावधानियाँ

यदि आप घर के अन्दर हैं तो

- पानी का नल, फ्रिज, टेलिफोन आदि से दूर रहें। मोबाईल फोन का प्रयोग न करें।
- बिजली से चलने वाले सभी यंत्र जैसे- कम्प्यूटर, टेलीविजन, फ्रिज, रेडियो, कूलर आदि बन्द कर दें। मोडेम एवं पावर प्लग निकाल दें।
- खिड़की दरवाजे बन्द कर दें। सारे पर्दे लगा दें।
- टेलीफोन का प्रयोग यथासंभव नहीं करें।
- विद्युतचालक वस्तुओं जैसे - लोहा, पीतल आदि को न घुँयें।
- खाली पैर फर्श पर न खड़े रहें।

यदि आप वाहन पर हैं तो

- यदि दो पहिया वाहन, ट्रक, ट्रैक्टर आदि पर है तो तुरन्त उतरकर सुरक्षित स्थान पर चले जाये।
- वज्रपात के समय तुरन्त वाहन को रोक दे।

यदि आप खेत खलिहान अथवा जंगल में हैं तो

- बिजली की चमक देख तथा गड़गड़ाहट की आवाज सुनकर

ऊँचे एवं एकल पेड़ों के नीचे नहीं जायें।

- यदि आप जंगल में हों तो कम ऊँचाई वाले बौने घने पेड़ों अथवा झाड़ियों की शरण में चले जायें।
 - वृक्षों, दलदली स्थानों तथा जल स्त्रोंतो से यथा संभव दूर रहें परन्तु खुले आकाश में रहने से बेहतर है कि छोटे-पेड़ों के नीचे रहे।
 - खुले आकाश में रहने को बाध्य हों तो नीचे के स्थलों को चुनें। एक साथ कई व्यक्ति इकट्ठे न हों। दो लोगों के बीच की दूरी कम से कम 15 फीट हो।
 - गीले खेतों या तालाब में काम करते लोग तुरन्त सूखे एवं सुरक्षित स्थान पर चले जायें।
 - तैराकी कर रहे लोग, मछुवारे आदि अविलम्ब पानी से बाहर निकल जायें।
 - धातु की डंडी वाले छाते का प्रयोग न करें।
 - धातु से बने कृषि यंत्र, डंडा आदि को अपने से दूर कर लें।
 - टेलीफोन, बिजली एवं टेलीविजन के पोल/टावर आदि से दूर रहे। कम से कम पोल की लम्बाई से अधिक दूरी बनाकर रखें।
- ### यदि आस पास कोई सुरक्षित स्थान न दिखाई दे तो
- जहां है वही रहें। संभव हो तो पैरों के नीचे सूखी लकड़ी प्लास्टिक, बोरा, या सूखे पत्ते रख लें।
 - दोनों पैरों को आपस में सटा ले एवं दोनों हाथों को घुटनों पर रखकर अपने सिर को जमीन की तरफ यथा संभव झुका लें, परंतु सिर का जमीन से स्पर्श न होने दे।
 - जमीन पर बिल्कुल नहीं लेंते।